ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स नो वसून्याभर। **अथर्ववेद 6/63/4**

वह परमेश्वर हमें धन धान्य प्राप्त कराएं।

O Lord ! Bestow upon us wealth & Prospevity.

वर्ष 38, अंक 39 **एक प्रति : 5 रुपये**
सोमवार 10 अगस्त, 2015 से रविवार 16 अगस्त, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये **पृष्ठ 8**
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से समस्त पाठकों एवं विज्ञापनदाताओं को स्वतंत्रता दिवस की 68वीं वर्षगांठ पर हार्दिक शुभकामनाएं।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल नियुक्त होने पर आचार्य देवव्रत जी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

श्रावणी पर्व पर वैदिक साहित्य का वितरण कर धर्म लाभ पहुंचाएं

महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म में स्वाध्याय को प्रत्येक वर्ण और आश्रम व्यवस्था के लिए अनिवार्य और आवश्यक रूप से प्रधान बताया है। ब्राह्मण वर्ण और ब्रह्मचर्य आश्रम की कल्पना ही स्वाध्याय के साथ जुड़ी है अर्थात् विद्यार्थियों का स्वाध्याय से विमुख रहना समाज के लिए किसी भी दृष्टि से हितकारी नहीं हो सकता। क्षत्रिय वर्ण अर्थात् देश की रक्षा करने वाले यानी पुलिस और सैन्य बल तथा शासन करने वाले उच्चाधिकारी यदि स्वाध्यायशील रहें तो देश की आन्तरिक और बाहरी सुरक्षा तथा अनुशासन स्थापित करने में अवश्य ही सहायता मिलेगी। वैश्य वर्ण यदि स्वाध्यायशील रहता है तो देश की व्यापारिक गतिविधियों को सात्विक उन्नति प्राप्त होगी। इसी प्रकार शूद्र वर्ण भी स्वाध्याय के सहारे केवल अपना ही नहीं अपितु अपने आस-पास के समाज को भी सद्व्यवहार के द्वारा सुगन्धित कर सकता है।

इस वर्ष स्वाधीनता दिवस, रक्षाबन्धन और श्री कृष्ण जन्माष्टमी के मध्य के अन्तराल को यदि वेद प्रचार सप्ताह के रूप में आयोजित कर उसके अन्तर्गत स्थान-स्थान पर यज्ञ, सत्संग, भजन संध्याओं का आयोजन करें यदि सम्भव हो तो इन कार्यक्रमों को किसी पार्क, हॉल या किसी सार्वजनिक स्थल पर आयोजित करने की कोशिश करें क्योंकि वेद प्रचार कार्यक्रमों को उत्साह पूर्वक व अधिक से अधिक लोगों के बीच मनाने से ही वेद ज्ञान की धारा को प्रवाहित किया जा सकता है और वैदिक धर्म का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो सकता है।

इन कार्यक्रमों में युवा वर्ग को विशेष रूप से आमंत्रित करें और मंच संचालन का कार्य भी युवा वर्ग को ही सौंपें जिससे आज के युवाओं के अन्दर वैदिक धर्म और वेद

...शेष पेज 2 पर

यज्ञमय जीवन जीने की कला में सिद्धहस्त ईश्वर निष्ठ महासन्त, दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष

पूज्यपाद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती दिवंगत

स्वामी जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे- धर्मपाल आर्य

यज्ञों में अति आस्थावान तथा यज्ञमय जीवन जीने वाले, यज्ञों के प्रति अपना जीवन अर्पित करने वाले तथा अपना सम्पूर्ण जीवन महर्षि दयानन्द के सुझाए मार्ग पर चलने वाले ईश्वरनिष्ठ, कर्मठ, तपोनिष्ठ, महासंन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती का 5 अगस्त 2015 को रात्रि 9.45 बजे देहान्त हो गया वे 76 वर्ष थे।

स्वामी सुमेधानन्द जी हिमाचल प्रदेश में रावी नदी के तट पर स्थापित 'दयानन्द मठ चम्बा' के माध्यम से आर्य समाज तथा लोक कल्याण के लिए समर्पित होकर कार्यशील थे। स्वामी जी प्रकाण्ड विद्वान तो थे ही साथ ही वे निरन्तर वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों व दर्शन शास्त्र का स्वाध्याय करते थे। स्वामी जी ने इन ग्रन्थों में यज्ञ की महिमा को पढ़ा, यज्ञ के विषय को जाना तो उन्होंने भी अपने आपको यज्ञों के प्रति समर्पित कर दिया था तथा अपने जीवन को यज्ञमय बना कर यज्ञों को अपने जीवन में उतार लिया था। स्वामी जी ने दयानन्द मठ चम्बा में गुरुकुल, विशाल चिकित्सालय, वैदिक अनुसंधान केन्द्र तथा अन्य अनेकों गतिविधियों को संचालित कर रखा था। वयोवृद्ध होते हुए भी वे देश के विभिन्न भागों में जाकर आर्य समाज की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के विशेष प्रयास करते रहे थे। देश की वर्तमान परिस्थितियों से वे बहुत दु:खी थे उनका कहना था कि जब तक देश की संसद में आर्य समाजी विचारधारा के व्यक्ति नहीं पहुंचेंगे तब तक देश का कल्याण नहीं हो सकता। स्वामी जी ने इस दिशा में काफी प्रयास भी किये कि चुनावों में आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित लोग आगे आयें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि 'स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती आर्य जगत की ऐसी विभूति थे जो वेद शास्त्रों में निष्णात विद्वान होने के साथ-साथ सुमधुर व्यक्तित्व के कारण समाज को नई दिशा प्रदान कर रहे थे तथा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे।' स्वामी जी ओजस्वी वक्ता, समाज सेवी, त्याग और परोपकार की भावना से ओत-प्रोत उदार हृदय के महान व्यक्ति थे। यदि एक वाक्य में स्वामी जी के जीवन का मूल्यांकन करना हो तो यही कहेंगे कि उनका जीवन दूसरों को शीतलता प्रदान करने वाला था। उनके निधन से आर्य समाज ने एक अप्रतिम योद्धा खो दिया है जिसकी पूर्ति निश्चय ही आसान नहीं होगी। स्वामी जी का कृतित्व व्यक्तित्व हमेशा हम सबके लिए प्रेरणा स्रोत बना रहेगा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से स्वामी जी को श्रद्धासुमन अर्पित हैं।

स्वाध्याय

ज्ञानी पुरुष सब ओर ईश्वरकृत अद्भुत बातों को देखता है

अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वां अभि पश्यति। कृतानि या च कर्त्वा।। -ऋ. 1/25/11

ऋषि: - **आजीगर्ति: शुन:शेप:।।** देवता-**वरुण:।।** छन्द:-**गायत्री।।**

शब्दार्थ- चिकित्वान्- ज्ञानी पुरुष **कृतानि या च कर्त्वा**- जो की जा चुकी हैं और जो की जाएंगी **विश्वानी अद्भुतानि**-उन सब अद्भुत बातें को **अत:**-इस परमेश्वर से हुई **अभिपश्यति**-सब ओर देखता है।

विनय - इस संसार में हम बहुआ आश्चर्य चकित कर देने वाली घटनाएं होते देखा करते हैं। इनका करने वाला कौन है? वैसे तो प्रतिदिन होने वाली बातों को भी यदि हम ध्यान पूर्वक देखें तो हमें उनमें भी बड़ी अद्भुतता दीखेगी। ये अन्धकार और प्रकाश कितनी अद्भुत वस्तु है जिनका परिवर्तन हम रोज सायं-प्रात: देखते हैं! नन्हे से बीज से बड़ा भारी वृक्ष बन जाना; अभी चलते-फिरते, हंसते-खेलते दीखते मनुष्य का एकदम ऐसा सो जाना कि वह फिर कभी न जग सकेगा; जीव से जीव पैदा हो जाना- ये सब भी वास्तव में कितनी अद्भुत बातें हैं! परन्तु जब पृथिवी आग बरसाने लगती है और ज्वालामुखी फटने से सैकड़ों शहर बरबाद हो जाते हैं, भूकम्प आते हैं।, बड़े-बड़े साम्राज्य देखते-देखते मिट जाते है।, थोड़े ही दिनों में एक मनुष्य सितारे की भांति ऊंचा उठ जाता है, यशस्वी हो जाता है या राजा रंक हो जाता है, तो इनमें अद्भुतता सभी अनुभव करते हैं। विज्ञान के आजकल के अद्भुत चमत्कारों को देखो! सिद्ध साधु-सन्तों द्वारा हुई चकित कर देने वाली बातों को देखो! ये सब संसार में एक-से-एक बढ़कर अद्भुत हैं। इन सब अद्भुतों का करने वाला कौन है? हम लोग समझते हैं कि इनके करने वाले मनुष्य हैं, मनुष्य की वैज्ञानिक शक्ति या संघशक्ति है; या कुछ भी नहीं है केवल प्रकृति का खेल है, परन्तु जो ''चिकित्वान्'' (जाननेवाले) हैं उन्हें तो सब ओर इन अद्भुतों का करने वाला वही इन्द्र (परमेश्वर) दीखता है। उसी से ये सब संसार के आश्चर्य निकलते दीखते है। इन सब विविध आश्चर्य को देखते हुए उनकी दृष्टि सदा उस एक इन्द्र पर ही रहती है। उनके लिए फिर ये आश्चर्य कुछ आश्चर्य नहीं रहते। प्रभु तो ''गूंगे को वाचाल करने वाले और लंगड़े को भी पहाड़ लंघाने वाले'' हैं ही। संसार में जो अद्भुत बातें हो चुकी हैं वे सब प्रभु की ही की हुई थीं; कल जो अद्भुत घटना होने वाली है, कोई तख्ता पलटने वाला है, वह भी उसी प्रभु की सहज लीला से ही होने वाला है। प्रभु की अपार लीला देखने वाले ज्ञानी इसमें कुछ आश्चर्य नहीं करते। वे अद्भुत-से-अद्भुत घटना में भी कार्य कारण भाव को देखते हैं।

अत: हे मनुष्यो! संसार के इन आश्चर्यों को देखकर चकित होना छोड़ दो, किन्तु इनको देखकर इनके कर्त्ता को पहचानो। उस नट को पहचानो जोकि संसार को यह अद्भुत नाच नचा रहा है।

साभार: वैदिक विनय

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

- विजय आर्य

मो. 09540040339

सम्पादकीय

दो हिस्सों में बंटा समाज

बडी विड़म्बना की बात है कि एक आतंकी का नाम तो सारे देश की जुबान पर चढ गया किन्तु भारत मां के उन दो वीर सपूतों के नाम सारा देश भूल गया जो अपना जीवन देश और अपने 44 साथियों के प्राणों की रक्षा हेतु अमर बलिदान हो गये। सीमा सुरक्षा बल के इन दो जवानों की वीरता का गुणगान जितना भी किया जाये कम है। हरियाणा के गांव रामगढ माजरा यमुना नगर की मिट्टी में जन्में रॉकी और धुपगढी जलपाईगुड़ी पश्चिम बंगाल के बेटे शुभेंदु राय ने गोलियां लगने के बावजूद आतंकवादियों से लड़ते-लड़ते वीरगति प्राप्त की। लेकिन शर्म की बात ये है कि देश की मीडिया को आतंकी नावेद उर्फ कासिम खान का नाम तो याद रह गया पर भारत माता की गोद में सोये इन दो लाल को भूल गयी।

दूसरी पीड़ा का अनुभव उस वक्त हुआ जब भारत के वो राजनेता आतंकी मेमन के जनाजे पर आंसू बहा रहे थे पर इन दो जवानों की श्रद्धांजली के लिये उनके मुख से संवेदना के दो शब्द भी सुनायी नहीं दिये, इनके लिये न वे उतना समय दे पाये जो मेमन के लिये पूरी रात कानून की चौखट पर बैठकर इन लोगों ने दिया था और न वो मानवाधिकार आयोग इनके घर पहुँचा जो आतंक को हमेशा मासूम बताकर घड़ियाली आंसुओं से खून के छीटें साफ करता नजर आता है। और हद तो तब हो गयी जब पकड़े गये हत्यारे आतंकी ने यह कहा कि ''हिन्दुओं को मारने में मजा आता है'' आखिर इन लोगों के आका इन लोगों को कैसे प्रेरित करते हैं किस तरीके से वो आतंकी मुस्कुराकर बता रहा था कि ''ईद पर बाज़वान (शपथ) खायी थी कि अमरनाथ यात्रियों को मारना है।'' चलो उस आतंकी ने बाज़वान खाया पर अपने देश के कुछ नेताओं ने क्या खाया जो हमेशा पाकिस्तान की भाषा बोलते हैं। इसे देखकर तो ऐसा लगता है कि भारत को उन नावेदों और याकूबों से ज्यादा तो इन नेताओं से खतरा है जो यहां बैठकर पाकिस्तान की स्थापित आतंकी नीति का सम्पोषण करते हैं। पाकिस्तान जहां भारत में धार्मिक तोड़-फोड़ कर देश को कमजोर करने की कोशिश कर रहा है वहीं ये लोग देश में जातिगत विद्वैष पैदा कर रहे हैं। आतंकवाद के खिलाफ टाडा, पोटा दो कानून पूर्व सरकार ने ये कहकर खत्म कर दिया कि ये कानून ठीक नही है क्योंकि इनमें एक ही समुदाय के लोग पकड़े जाते हैं। सन् 2006 में केरल की विधान सभा के अन्दर सत्ता पक्ष और विपक्ष में राजनैतिक दलों के नाम नहीं लेना चाहता ने कोयम्बटूर हमले का आरोपी मौलाना मदनी को रिहा कर दिया गया। भारत की मीडिया को मदनी तो नजर आया किन्तु संविधान की पीठ में जो छुरा घोपा गया वो नजर नहीं आया जिसे घोपकर मदनी को आजाद कराया गया था।

आज भारतीय समाज दो हिस्सों में बंटा खड़ा है एक तो वो छोटा धड़ा है जो आतंक के प्रति संवेदना रखता है और दूसरा वो बड़ा हिस्सा जो आतंक के खिलाफ है और वो आतंक के खिलाफ सख्त कानून भी चाहता है और यहां भी विडम्बना देखिए कि छोटा हिस्सा बड़े हिस्से पर हावी है 'बिलकुल ऐसे जैसे कानून की चेतना पर अपराध की उपचेतना हावी हो!'

खैर रॉकी और शुभेंदू को सारे देश की नम आंखों से नमन, उन माताओं को श्रद्धा से नमन जिनकी कोख से ये देशभक्त महावीर पैदा होते हैं। देश के गृहमंत्री का आभार जिन्होंने इन वीरों का नाम वीरता पुरस्कार के लिये चुना और उन लोगों को एक पैगाम जो ये कहते हैं कि आतंक का कोई धर्म नहीं होता यदि वो मानते हैं तो फिर ये नावेद, कसाब, अजमल पैदा न करे यदि पैदा करना है तो डॉ कलाम, वीर अब्दुल हमीद, तारिक फतेह, अशफाक जैसे लोग पैदा करें जिससे देश धर्म से लेकर जननी मां तक के गौरव गान को बढ़ाया जा सके। ***-सम्पादक***

पृष्ठ 1 का शेष श्रावणी पर्व ...

वेद प्रचार कार्यक्रम को अधिकाधिक सफल बनाने के लिए निम्न कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते हैं-

1. वृहद यज्ञों, सत्संगों का आयोजन यदि सम्भव हो तो पार्कों या अन्य सार्वजनिक स्थलों पर करें जिसमें आर्य जनों के अतिरिक्त जन सामान्य को भी आमंत्रित करें। सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी करें।
2. यज्ञ के दौरान तथा बाद में आर्य उपदेशकों तथा स्वाध्यायशील ऋषियों, महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन सामान्य को वैदिक व आध्यात्मिक तथा आर्य (श्रेष्ठ) विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरणा प्राप्त हो।
3. अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्ग के लोगों जैसे युवा वर्ग, महिला वर्ग, वृद्ध, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार गोष्ठियां, खेल प्रतियोगिताओं, लघु सम्मेलन अथवा कार्यशालाओं का आयोजन करें।
4. वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश के प्रवचन/कथाओं का आयोजन करें जिससे इन ग्रन्थों के विचारों से जन सामान्य अवगत हो सके और उन्हें धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय एवं राजनीतिक उत्थान के लिए प्रेरणा मिल सके।
5. क्षेत्र में रहने वाले उच्च अधिकारी, पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें। इस हेतु आर्य समाज से 'एक निमंत्रण', 'आर्य समाज के स्वर्णिम सूत्र' एवं 'लघु(बाल) सत्यार्थ प्रकाश, प्राप्त कर उपहार स्वरूप प्रदान करें।
6. देश भक्ति के गीतों की भजन संध्या, वीर रस के कवियों का कवि सम्मेलन, वेद प्रचार पुस्तक मेला, स्वदेशी चिकित्सा पद्धति पर आधारित खान-पान व्यवस्था व आयुर्वेद स्वास्थ्यवर्धक औषधि सम्बन्धी मेलों का आयोजन करना चाहिए जिसके अन्तर्गत विद्वानों के प्रवचन आर्य वीरदल की कन्याओं द्वारा शक्ति प्रदर्शन, योगा इत्यादि के कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते हैं।
7. आर्य समाज के समस्त सदस्यों/अधिकारियों की एक विशेष बैठक आयोजित करके 'आत्मावलोकन' अवश्य करें कि क्या हमारे समाज की गतिविधियां सन्तोषजनक हैं? क्या उसमें और अधिक की आवश्यकता है, क्या उसमें कुछ और सुधार किये जा सकते हैं।
8. श्रावणी उपाकर्म एवं सामूहिक यज्ञोपवीत परिवर्तन का विशेष रूप से आयोजन करें।
9. उपरोक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त यदि कोई और कार्यक्रम आपके संज्ञान में हो तो उसे क्रियांवित करें व हमें भी सुझाएं।

इस प्रकार श्रावणी पर्व को वेद प्रचार पर्व के रूप में आयोजित कर महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

आर्यसमाज की मिसकॉल सेवा 9211990990

अपने मोबाइल से मिस कॉल दें और पाएं नि:शुल्क जानकारी

एस.एम.एस. से जानकारी चाहने वाले सज्जन इस नम्बर पर मिसकॉल करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार हेतु मिसकॉल सेवा आरम्भ की गई। आप इस सेवा का लाभ उठाएं। यदि आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा आर्यसमाज से संबंधित किसी भी प्रकार की कोई जानकारी-सूचना प्राप्त करना चाहते हो तो 09211990990 पर मिसकॉल करें। आपके द्वारा कॉल करते ही कॉल कट जाएगी और आपको **धन्यवाद** संदेश प्राप्त होगा तथा आपका मो. नं. एस.एम.एस. सूची में अंकित हो जाएगा। **-महामंत्री**

आजादी (राष्ट्रीय पर्व) बनाम महर्षि दयानन्द

पराधीनता के इतिहास में सन् 1193 में पृथ्वी राज चौहान को हरा कर शाहबुद्दीन ने दिल्ली में मुसलमानों का राज्य स्थापित किया जो सन् 1757 तक चला जिसमें कई खूंखर व खूनी शासकों ने 564 वर्ष भारत में मारकाट मचाई। बाद में अंग्रेजों ने सन् 1947 तक 190 वर्ष के शासन में भारत से सोने की चिड़िया चुरा ली व देश को कंकाल बना दिया।

'स्वदेशी शासन चाहे कितना ही बुरा क्यों न हो विदेशी शासन से अच्छा ही रहता है। परतंत्र भारत में सबसे पहले यह विचार निर्भीकता एवं स्व प्रेरणा से प्रकट करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे जिन्होंने हमें आजादी की प्रेरणा दी। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप सन् 1857 से स्वतंत्रता आंदोलन की शुरुआत हो गई थी। बाद में देशी रियासतों के शासकों ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया। कई सेनानी स्वतंत्रता के संग्राम में कूद पड़े यथा भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, ऊधम सिंह, राजगुरु, सुखदेव, रोशन लाल आदि ने अपने प्राण त्याग दिये।

राजनैतिक स्वरूप के अहिंसक आंदोलन में महात्मा गांधी के नेतृत्व में पं. जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, राजा राम मोहन राय, लाल बहादुर शास्त्री, दादा भाई नौरोजी, विनायक दामोदर दास, मौलाना आजाद, सरोजनी नायडू, डॉ. राधा कृष्णन्, डॉ जाकिर हुसैन, प्रफुल चन्द्र, रास बिहारी बसु, डॉ, बी. आर. अंबेडकर, विनोवा भावे, जय प्रकाश नारायण, एन. संजीव रेड्डी, नाना साहब, राजा राम मोहन राय, चितरंजन दास, विपिन चन्द्र पाल, बहादुर शाह जफर, गोपाल कृष्ण गोखले, लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक, बीर सावरकर, सुभाष चन्द बोस, सी. राज गोपालाचार्य, पं. मदन मोहन मालवीय, गोविन्द वल्लभ पंत, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जय प्रकाश नारायण, फखरुद्दीन अली अहमद, एनी बेसेन्ट, मोरारजी देसाई, बी.डी. जत्थी इत्यादि ने भाग लिया व जेल की यातनाएं सहीं।

महर्षि दयानन्द ने एकेश्व वाद के साथ ही समाज सुधार का बहुत बड़ा आंदोलन गुरु विरजानन्द की प्रेरणा से हाथ में लिया। समाज में कुरीतियों व अंधविश्वास घर कर गये थे। सर्वत्र समाज में अंधकार छाया हुआ था, उसे मिटाने के लिए विधवा स्त्री विवाह चालू करवाया, बाल विवाह बंद करने की प्रेरणा दी, गौ संरक्षण एवं छुआ-छूत मिटाने हेतु चारों वर्ण व्यवस्था की मर्यादा बतलाई। जादू-टोने टोटके को मिटाने की प्रेरणा दी व एक ही परमपिता परमेश्वर की न्याय व्यवस्था एवं उपासना की प्राप्ति के लिए अमर ग्रंथ ''सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना की। बाद में इन्हीं सुधारों के विषय में महात्मा गांधी ने पहल करके अपने जीवन में उतारा व लोगों को भी प्रेरणा दी भारतीय संविधान जो 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ उसमें भी इन्हीं सुधारों को प्राथमिकता मिली जिन्हें गांधी जी ने अपनाया व सर्व प्रथम ऋषि दयानन्द ने उद्घोषित किया था।

पराधीनता के इतिहास में सन् 1193 में पृथ्वी राज चौहान को हरा कर शाहबुद्दीन ने दिल्ली में मुसलमानों का राज्य स्थापित किया जो सन् 1757 तक चला जिसमें कई खूंखर व खूनी शासकों ने 564 वर्ष भारत में मारकाट मचाई। बाद में अंग्रेजों ने सन् 1947 तक 190 वर्ष के शासन में भारत से सोने की चिड़िया चुरा ली व देश को कंकाल बना दिया।

आज हम आजाद भारत में सांस ले रहे हैं। हमें राजनीति में भाग लेकर संसद द्वारा किये जा रहे सुधार कार्यक्रमों में व कानून बनाने में हिस्सा लेना चाहिए। संसद में जब प्रकाश वीर शास्त्री (आर्य विचारक) का भाषण होता था तब संसद में पूर्ण रूप से शान्ति रहती थी व सांसद बड़े ध्यान पूर्वक उनका भाषण सुनते थे। आज संसद में स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती पहुंचे हैं तो उनका लाभ भी पूरे भारत वर्ष को प्राप्त होगा।

मंत्र- कर्हि स्वित्तदिन्द्र यूज्जरित्रे विश्वप्स ब्रह्म कणवः शविष्ठ।

कदाधियोन नियुतो युवासे कदा गोगथ। हवनानि गच्छाः।।

-ऋग्वेद (1) 6-7-35-3

भावार्थ - हे इन्द्र (राष्ट्राध्यक्ष) आपके सुशासन में धन वृद्धि, पूर्ण बुद्धिमता एवं उत्तम क्रिया कलापों को लागू कीजिये, जिससे प्रजा का भला हो।

आज हम राष्ट्रीय स्तर पर तो 15 अगस्त और 26 जनवरी के त्योहारों को लाल किले पर ध्वजा रोहण के साथ मनाते हैं जिसमें विदेशी मेहमान भी आमंत्रित किये जाते हैं। सेना व राष्ट्रीय योजनाओं का प्रदर्शन भी किया जाता है। स्थानीय स्तर पर भी इन दोनों त्योहारों को मनाये जाने की प्रथा है, लेकिन अफसोस की बात यह है कि जनता जनार्दन ने ये पर्व अपने स्तर पर आज भी स्वीकार नहीं किये है। कितना अच्छा होता यदि भारत का हर नागरिक अपने घर-संस्थान में तिरंगा फहराता, राष्ट्रीय गान गाता व मिठाई बांटता। कुछ लोग तो यह भी मानते हैं कि तिरंगा तो कांग्रेस का है, इससे हमारा क्या लेना-देना। लेकिन यह तो स्पष्ट है कि तिरंगा ऊपर से केसरिया बहादुरी का, नीचे हरा हरियाली (खेती) का एवं बीच में सफेद शान्ति का प्रतीक है, जिसके बीच में अशोक चक्र की 24 पंखुड़ियां होती हैं। कांग्रेस के तिरंगे के बीच में हाथ के पंजे का निशान होता है। राष्ट्रीय ध्वज के अतिरिक्त सभी प्रकार के झंडे चौबीसों घण्टे लहराते रहते हैं लेकिन जहां तक राष्ट्रीय ध्वज का प्रश्न है वहां पार्टी अपना झंडा न लगाकर यदि राष्ट्रीय ध्वज फहराये तो पार्टी की देश के प्रति आस्था व विश्वास जरूर प्रकट होगा।

आर्य समाज एवं उच्च संस्थाओं में राष्ट्रीय पर्व पर तिरंगा फहराने का चलन नहीं है। हां, अगर कहीं किसी ने पर्व मना भी लिया तो उसका उल्लेख सामने नहीं आ पाता। हमने केवल ओ३म् का भगवा झंडा ही अपनाया हुआ है। कहने को तो हम बड़े गर्व से कहते हैं कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में 90 प्रतिशत लोग जो शहीद हुए व यातनाएं सहीं वो आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित थे। हमारे पूर्वजों ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था तो उसका प्रतिफल राष्ट्रीय पर्व मनाने में हम पीछे क्यों रह जाते हैं। हम भारतवासी जैसे होली, दिवाली, ईद, क्रिसमस, दुर्गाष्टमी, गुरु पर्व आदि मनाते हैं वैसे ही राष्ट्रीय पर्व क्यों नहीं मनाते। हममें किसी प्रकार की राष्ट्रीयता की कोई कमी तो नहीं है। हमें इस विषय में गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

हमें इसी माह यह पर्व प्रयत्न करके प्रत्येक आर्य समाज, आर्य वीर दल शाखा एवं उच्चस्तरीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में राष्ट्रीय पर्व मनाने की शुरुआत करनी चाहिए। देर आये-दुरुस्त आये । हमने सारे संसार को आर्य बनाने का बीड़ा उठा रखा है तो हमें सबसे पहले हमारी उच्च कोटि की राष्ट्रीयता प्रस्तुत करनी चाहिए। अतः सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि उक्त पर्व को पूर्ण श्रद्धा के साथ मनावें और इसका अच्छी तरह प्रसार-प्रचार भी उपलब्ध साधनों, मीडिया, पत्र-पत्रिकाओं आदि के द्वारा करावे एवं अपने विचार प्रस्तुत करावें। इसी के साथ सभी प्रबुद्ध पाठकों को 68वें स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

-नरसिंह सोलंकी, मंत्री आर्य

स्वास्थ्य चर्चा

अनानास

क्या आप बारिश के मौसम में फल खाने के परहेज करते हैं यदि हां फिर भी आपको विटामिन 'सी' युक्त फलों का सेवन स्वस्थ शरीर के लिए जरूर करना चाहिए। क्योंकि विटामिन 'सी' युक्त फल आपके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। इन दिनों बाजार में अनानास की बहार है। यह फल खट्टा-मीठा होने के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी अति फायदेमंद होता है। इसका उपयोग भोजन के साथ, सलाद और डेजर्ट में किया जाता है। इसमें कैल्शियम, फाईबर और विटामिन सी पाया जाता है। इसमें वसा बहुत कम मात्रा में पाया जाता है।

हड्डियों को मजबूत बनाता है व शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है- अनानास में प्रचुर मात्रा में मैग्नीशियम पाया जाता है। यह शरीर की हड्डियों को मजबूत बनाने और शरीर को ऊर्जा प्रदान करने का सर्वोत्तम भोज्य पदार्थ है। एक कप अनानास का जूस पीने से शरीर में दिनभर के लिए जरूरी मैग्नीशियम की 73 प्रतिशत मात्रा की पूर्ति होती है।

आंखों के लिए फायदेमंद- अनानास अपने विशिष्ट गुणों के कारण आंखों की दृष्टि के लिए भी उपयोगी होता है। पूर्व में हुए शोधों के मुताबिक दिन में तीन बार इस फल को खाने से बढ़ती उम्र के साथ कम होती आखों की रोशनी का खतरा कम हो जाता है।

कैंसर में लाभकारी- आस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों के मुताबिक यह कैंसर के खतरे को भी कम करता है।

थायराइट में लाभकारी- थायराइट को रोकने में अनानास बहुत ही लाभदायक औषधि है।

गठिया, गले की सूजन, खांसी-जुखाम में लाभदायक- अनानास में पाया जाने वाला ब्रोमिलेन सर्दी और खांसी-जुखाम, सूजन, गले में खराश और गठिया में फायदेमंद होता है।

पाचन क्रिया में लाभदायक- अनानास शरीर की पाचन क्रिया को दुरुस्त करता है।

एंटीआक्सीडेंट का स्रोत - अनानास में विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और साधारण ठंड से भी सुरक्षा मिलती है। इससे सर्दी समेत कई अन्य संक्रमण का खतारा कम हो जाता है।

अंतर्विद्यालयीय समूह गान प्रतियोगिता का द्वितीय चरण सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद का उद्देश्य बच्चों के लिए नैतिक शिक्षा की व्यवस्था करना है। अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चों में नैतिक शिक्षा के साथ-साथ विभिन्न प्रतिभाओं को भी आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

कार्यक्रम में उपस्थित पूर्व प्रोफेसर व शिक्षाविद् श्रीमती उमा शशि दुर्गा ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैं 'आर्य विद्या परिषद के इस सार्थक प्रयास के लिए परिषद के सभी अधिकारियों को हार्दिक साधुवाद देती हूं जिन्होंने बच्चों की प्रतिभा विकास के कार्यक्रमों को आयोजित करने की पहल की।'

समूह गान प्रतियोगिता का आयोजन 6 अगस्त 2015 आर्य समाज मंदिर,15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में किया गया। तीन वर्गों में विभाजित इस प्रतियोगिता में विभिन्न आर्य विद्यालयों के विद्यार्थियों ने क्रमशः महर्षि दयानन्द, देश भक्ति व आर्य समाज पर गीत प्रस्तुत किये। सभी प्रस्तुतियां बहुत ही मनमोहक रही। सभी वर्गों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार दिये गये। विभिन्न विद्यालयों की अध्यापिकाओं को आचार्य सत्यानंद जी द्वारा संकलित पुस्तक 'भजन संगीत सागर' भेंट की गई। इस अवसर पर आर्य केंद्रीय सभा के मंत्री श्री एस.पी. सिंह, श्रीमती उमा शशि दुर्गा, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती तृप्ता आर्या व श्रीमती सुनीता बुग्गा उपस्थित रहीं। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। **-आर्य विद्या परिषद**

आगामी अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिताएं

भाषण प्रतियोगिता	18/08/2015 (मंगलवार)	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल आर्य समाज सरोजिनी नगर दिल्ली
नुक्कड़ नाटक	27/08/2015 (वीरवार)	लालीबाई बाल विद्यालय आर्य समाज, गोविन्द भवन, दयानन्द वाटिका राम बाग, नई दिल्ली-07

सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड तथा महर्षि दयानंद शिक्षण संस्थान के स्कूलों द्वारा

महात्मा कन्हैया लाल महता जन्म दिवस सम्पन्न

आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड तथा महर्षि दयानंद शिक्षण संस्थान के स्कूलों व के. एल.महता दयानंद पब्लिक स्कूलों ने अपने संस्थापक-अध्यक्ष महात्मा कन्हैया लाल महता का जन्म दिवस 'विद्यार्थी अवार्ड दिवस' के रूप में श्रद्धा पूर्वक मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि स्वामी विजय पाल जी महाराज ने हरियाणा बोर्ड की तथा सी.बी.एस.ई. बोर्ड की दसवीं तथा बारहवीं परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र व स्वर्ण-पदक प्रदान किये समारोह की अध्यक्षता आचार्य विजय पाल जी ने की। संस्थान की अध्यक्षा डॉ. विमल महताजी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

बोध कथा

अच्छे संग तरे

लाहौर में एक प्रभु-प्रेमी छज्जू भक्त रहते थे। अपने चौबारे में सत्संगियों के साथ बैठे थे। ज्ञान-ध्यान की बातें चल रही थीं कि नीचे संगतरे बेचने वाला आया और ऊंची आवाज से कहने लगा - ''अच्छे संग तरे! अच्छे संग तरे!''

छज्जू भक्त ने सत्संगियों से पूछा - 'भक्तो! यह नीचे से क्या आवाज आ रही है?'

सत्संगी - 'महाराज! संगतरे बेचने वाला संगतरों का गुण बता रहा है।'

छज्जू - 'ठीक है, परन्तु कहता क्या है? सुना तो सही ध्यान से!'

फिर आवाज आई - 'अच्छे संग तरे!'

सत्संगी -'भक्त जी, अच्छे संगतरे ही कह रहा है।'

छज्जू - 'हां, यही कहता है। समझो - अच्छे संग तरे, जो अच्छों की संगति करता है, वह तर जाता है। अच्छे संग तरे।''

-साभार बोध कथाएं

प्रेरक प्रसंग

धर्म धुन में मगन, लगन कैसी लगी

कुछ वर्ष पूर्व की बात है। दयानन्द मठ दीनानगर के वयोवृद्ध कर्मठ साधु स्वामी सुबोधानन्दजी ने दिल्ली के लाला दीप चन्दजी के ट्रस्ट को प्रेरणा देकर सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार के लिए उन्हीं का साहित्य और उन्हीं का वाहन मंगवाया। स्वामीजी उस वाहन के साथ दूर-दूर नगरों व ग्रामों में जाते।

वर्षा ऋतु थी। भारी वर्षा आई। नदियों में तूफान आ गया। बहुत सवेरे उठकर स्वामी सुबोधानन्द शौच के लिए खेतों में गये। लौट रहे थे तो मठ के समीप बड़े पुल से निकलकर गहरे चौड़े नाले में गिर गये।

वृद्ध साहसी साधु ने दिल न छोड़ा। किसी प्रकार से उस बहुत गहरे पानी में से पुल के नीचे से निकल गये और बहुत दूर आगे जाकर जहां पानी का वेग कम था, बाहर निकल आये। पगड़ी गई, जूता गया। मठ में आकर वस्त्र बदले किसी को कुछ नहीं बताया।

किसी और का जूता पहनकर वाहन के साथ अंधेरे में ही चल पड़े। जागने पर एक साधु को उसका जूता न मिला। बड़े आश्चर्य की बात थी कि रात-रात में जूता गया कहां? किसी को कुछ भी समझ में न आया। जब स्वामी श्री सुबोधानन्दजी यात्रा से लौटे तब पता चला कि उनके साथ क्या घटना घटी। यह भी पता लगा जूता वही ले गये थे।

ऋषि मिशन के लिए जवानियां भेंट करने वाले और पग-पग पर कष्ट सहने वाले ऐसे प्रणवीरों से ही इस समाज की शोभा है। स्मरण रहे कि यह संन्यासी गज़टेड ऑफीसर रह चुके थे और कुछ वर्ष तक आप ही हिमाचल प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे। आइए! इनके पद चिह्नों पर चलते हुए हम सब ऋषि-ऋण चुकाने का यत्न करें।

साभार- तड़पवाले

वैदिक दर्शन व भारतीय इतिहास और संस्कृति का दर्शन विचार टी.वी. नेटवर्क

आर्य समाज के वैदिक कार्यक्रम अस्था चैनल पर प्रतिदिन रात्रि 9.30 से 10.00 बजे तक प्रसारित हो रहे हैं। इन कार्यक्रमों को आप भी अपने व्हट्स-अप्प, फेसबुक माध्यम से प्रचारित करने में अपना योगदान दें

आस्था चैनल के माध्यम से विचार टी.वी. प्रतिदिन रात्रि 9.30 से 10 बजे तक वैदिक दर्शन व भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में निरंतर अग्रसर है जिसे जीवन्त रखने में श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, अध्यक्ष, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री धर्मपाल आर्य, श्री दीनदयाल गुप्ता, श्री रविन्द्र आर्य, श्री जयंती लाल पोकार एवं श्री पीयूष आर्य निदेशक मंडल के सदस्य के रूप में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं।

चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी का कहना है कि ''विचार टी. वी. राष्ट्रीय सामाजिक चेतना को समर्पित एक संस्था है। इसका मूलभूत उद्देश्य एक अरब से भी अधिक वर्षों पुरानी प्राचीन वैदिक संस्कृति, भारतीय दर्शन, भारत का सच्चा इतिहास, स्वस्थ पारिवारिक मनोरंजन एवं जीवनोपयोगी ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाना है। यदि हम सब 'संगच्छध्वम्' की सोच को लेकर एक साथ चलेंगे तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का स्वप्न 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् 'समग्र विश्व को श्रेष्ठ बनाओ' को साकार करेंगे।''

विचार टी.वी. अपने कार्यक्रमों को आस्था भजन चैनल पर पुन: रात्रि 8 से 8.30 बजे तक प्रसारित करता है। विचार टी.वी. अगस्त माह में अपनी विशेष प्रस्तुति पेश कर रहा है 'एक दिन.... हम होंगे कामयाब।' विचार की इस प्रस्तुति में इतिहास के पन्नों में छिपी भारत मां के सपूतों के बचपन की प्रेरक कहानियों पर आधारित लघु फिल्मों की श्रृंखला

उपलब्ध कराई गयी है। इसमें मुकेश खन्ना मुख्य सूत्रधार के रूप में बच्चों को महापुरुषों के बचपन की घटनाएं सुनाकर उनके मन की दुर्बलताओं एवं शंकाओं का निवारण करते हैं। लघु फिल्मों की यह श्रृंखला जो कि सहज ही बच्चों को प्रेरणा लेने को प्रोत्साहित करती है।

विचार टी.वी. अपने साप्ताहिक कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रत्येक सोमवार को आध्यात्म गंगा का प्रसारण करता है जिसमें आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य आध्यात्म पर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं।

प्रत्येक मंगलवार स्वामी विवेकानन्दजी परिव्राजक आपकी शंकाओं का समाधान करते हैं।

प्रत्येक बुधवार आचार्य आशीष जी आर्य जी सफलता के स्वर्णिम सूत्र के अन्तर्गत अपने विचारों को प्रकट करते हैं।

प्रत्येक गुरुवार डॉ. विनय विद्यालंकार जी युवा और आध्यात्म कार्यक्रम के अन्तर्गत युवा वर्ग को सम्बोधित करते हैं।

प्रत्येक शुक्रवार आचार्य सत्यजित् जी योग दर्शन के अन्तर्गत योग विषय को प्रकाशित करते हैं।

प्रत्येक शनिवार डॉ. वागीश आचार्य सोलह संस्कार कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने ज्ञान की गंगा बहाते हैं। विचार टी.वी. द्वारा निर्मित कार्यक्रमों का दैनिक प्रसारण हर रोज रात्रि 9.30 से 10.00 बजे तक आस्था चैनल पर प्रसारित किया जा रहा है। इसका पुन: प्रसारण प्रत्येक दिन आस्था भजन चैनल पर भी रात्रि 8 से 8.30 बजे तक नियमित हो रहा है। विचार टी.वी. के सम्बन्ध में अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी व विज्ञापन सहयोग की भावना रखने वाले महानुभाव या संस्थान श्री धर्मेश आर्य कार्यकारी निदेशक मो. नं. 07738070401 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

आर्य समाज मंदिर सागरपुर, नई दिल्ली, वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सागरपुर का 35वां वार्षिकोत्सव एवं श्रावणी पर्व दिनांक 5 से 9 अगस्त 2015 तक बड़े धूमधाम के साथ सागरपुर के एक वृहत पार्क में सम्पन्न हुआ। 5 दिन चले इस कार्यक्रम में हजारों की संख्या में स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने आर्य समाज सागरपुर द्वारा खुले पार्क में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए विशेष धन्यवाद दिया एवं क्षेत्रीय पार्षद श्री प्रवीण राजपूत को सम्मानित किया गया तथा श्री प्रवीण राजपूत जी को आर्य समाज के सामने वाली रोड का नाम आर्य समाज रोड रखे जाने सम्बन्धी प्रस्ताव रखा गया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुखवीर सिंह आर्य ने किया। **-मान्धाता सिंह, मंत्री**

आर्य समाज दयानंद विहार में नार्वे से आये अतिथियों ने किया यज्ञ

आर्य समाज दयानंद विहार में २ अगस्त को ईश नारंग जी के मित्र के घर नार्वे से भारत भ्रमण के लिए पधारे कुछ विदेशी अतिथियों ने आर्य समाज दयानन्द विहार में यज्ञ किया। बाद में श्री ईश नारंग जी ने विदेशी मित्रों की आर्य समाज के प्रति जागृत शंकाओं का समाधान किया और इंग्लिश भाषा में लगभग एक घंटे तक यज्ञ की वैज्ञानिकता की व्याख्या की एवम् उनके प्रश्नों के उत्तर दिए जिससे विदेशी अतिथि बहुत प्रसन्न हुए। श्री ईश नारंग जी ने कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की व्याख्या की कि सारे संसार के मनुष्यों को श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाव वाले बनाओ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिडनी, आस्ट्रेलिया 2015

दिनांक 27, 28 व 29 नवम्बर 2015

आस्ट्रेलिया आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए, यात्रा विवरण

आर्यजन इस अवसर पर आस्ट्रेलिया के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण करना चाहेंगे, इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए आस्ट्रेलिया के अत्यन्त रमणीय एवं महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है। दोनों यात्राओं की जानकारी निम्न प्रकार है-

यात्रा नं. 1.

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन यात्रा (6 रात्रि 7 दिन)

दिनांक 24 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2015 तक

प्रस्थान : दिनांक 24.11.2015 को दोपहर 13.15 बजे दिल्ली से सिडनी के लिये
वापसी : दिनांक 1.12.2015 भारत के लिए वापसी सुबह 9:45 बजे सिडनी से।

-: कार्यक्रम :-

25 तथा 26 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(2 रात्रि)
27, 28 तथा 29 नवम्बर 2015	आर्य महासम्मेलन	(3 रात्रि)
30 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(1 रात्रि)
01 दिसम्बर 2015	भारत के लिये वापसी	

यात्रा नं. 2

आस्ट्रेलिया यात्रा (12 रात्रि 13 दिन) ● 24 नवम्बर से 07 दिसम्बर 2015 तक

प्रस्थान : दिनांक 24.11.2015 को दोपहर 13.15 बजे दिल्ली से सिडनी के लिये
वापसी : दिनांक 7.12.2015 भारत के लिये वापसी सुबह 09:45 बजे मैलबर्न से।

-: कार्यक्रम :-

25 तथा 26 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(2 रात्रि)
27, 28, तथा 29 नवम्बर 2015	आर्य महासम्मेलन	(3 रात्रि)
30 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(1 रात्रि)
01 दिसम्बर से 04 दिसम्बर तक	गोल्ड कोस्ट भ्रमण	(4 रात्रि)
05 दिसम्बर से 06 दिसम्बर तक	मैलबर्न भ्रमण	(2 रात्रि)
07 दिसम्बर 2015 को	भारत के लिए वापसी	

आवेदन पत्र हमारी बेवसाइट

www.thearyasamaj.org/download से डाउनलोड करें। शीघ्र आवेदन करें। स्थान सीमित है।

नोट:- आर्यजनों के आग्रह पर न्यूजीलैंड को जोड़कर यात्रा नं. 3 का कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है। विस्तृत जानकारी आर्य सन्देश के आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी।

आर्य सुरेश चन्द्र अग्रवाल, यात्रा संयोजक, मो. 09824072509

पाखंड और अन्धविश्वास देश को फिर गुलाम बनाएगा!

*श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी द्वारा लिखित पुस्तिका 'पाखंड और अन्धविश्वास देश को फिर गुलाम बनाएगा' की प्रथम किश्त में आपने उपरोक्त विषय से सम्बन्धित श्री रैली जी के विचार जाने। अब आगे पढ़ें... -**सम्पादक***

गतांक से आगे

दुग्ध पान केवल आँखों का धोखा मात्र था : दुग्धपान की अफवाह के फैलते ही राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद् ने एक वैज्ञानिक दल का गठन किया था। इस दल ने दिल्ली के विभिन्न मंदिरों का दौरा किया और अपने खोजी अध्ययनों के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि इस पूरे प्रकरण में चमत्कार जैसी कोई बात नहीं है। बल्कि, यह कुछ वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार हुआ । जब दूध को 90 अंश के झुकाव पर मूर्ति के संपर्क में लाया गया तो मूर्ति ने दूध नहीं पिया, लेकिन इसके विपरीत चम्मच का झुकाव होने पर दूधपान करते हुए प्रतीत हुआ । वैज्ञानिक दल ने अपनी व्याख्या में कहा कि वास्तव में प्रत्येक द्रव का अपना ''पृष्ठ तनाव'' (Surface Tension) होता है,जो कि द्रव के भीतर अणुओं के आपसी आकर्षण बल पर निर्भर करता है और इसका आकर्षण बल उस ओर भी होता है जिस पदार्थ के यह संपर्क में आता है। यहाँ पर भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही दूध संगमरमर की मूर्तियों के संपर्क में आया, वह तुरंत मूर्तियों की सतह पर विसरित हो गया, जिससे श्रद्धालुओं को लगा कि चम्मच से अचानक मूर्ति ने दूध खींच लिया है, जबकि दूध की पतली सी धार नीचे से निकलती रही जिस पर ज्यादातर लोगो का ध्यान नहीं गया, क्योंकि संगमरमर और दूध का रंग एक जैसा ही था । जब दूध में रोली मिला कर यह प्रयोग दोहराया गया तो रंगीन धार स्पष्ट नीचे जाती हुई दिखायी दी। इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि इस तथाकथित चमत्कार में कोई वास्तविकता नहीं थी, बल्कि यह वैज्ञानिक नियम के अनुसार सामान्य सी प्रक्रिया थी जिसे लोगों ने चमत्कार समझ लिया।

भारत के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रोफेसर यशपाल का कहना है कि गणेश को छोड़ मैं किसी भी अन्य मूर्तियों या पत्थर के टुकड़ों को दूध पिला सकता हूँ और दूध ही क्यों ये-मूर्तियाँ पानी भी पी सकती हैं । वास्तव में ऐसा पानी या दूध के पृष्ठ तनाव और कैपलरी प्रभाव के कारण होता है। पानी या दूध का यह कमाल भी प्रकृति की अन्य अनेक विशेषताओं में से एक है। कुछ लोगों का यह कहना है कि आज जब हम मूर्तियों और पत्थर के टुकड़ों को दूध पिलाते है तो उसमें से कुछ गिरता दिखायी देता है, लेकिन उस दिन ऐसा नहीं लगता था । प्रो0 यशपाल बताते हैं कि वस्तुत: देखने की प्रक्रिया में आंखों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण भूमिका दिमाग की होती है। इसी कारण दृष्टि भ्रम भी होता है। उस दिन हर व्यक्ति के दिमाग में यह बात घर कर गयी थी कि गणेश जी की मूर्ति दूध पी रही थी । पर अब हम यह मानकर चल रहे हैं कि मूर्ति या पत्थर को दूध पिलाने का प्रदर्शन मात्र किया जा रहा है। सच्चाई यह है कि दूध उस दिन भी गिर रहा था और आज भी गिर रहा है। फर्क केवल नजरिये का है। फलित ज्योतिष व टोने-टोटकों के फैलते मकड़जाल से बचें वैदिक साहित्य में ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण स्थान है। ज्योतिष को वेद के 6 अंगो में से एक माना जाता है। वेदों में बहुत से ऐसे मंत्र विद्यमान है जिन्हे ज्योतिष की सहायता के बिना समझा ही नहीं जा सकता, परन्तु यह सारा महत्व गणित ज्योतिष का है, फलित का नहीं । यह गणित और फलित ज्योतिष का अन्तर स्पष्ट करना आवश्यक है। गणित ज्योतिष वह विद्या है जिसके द्वारा सूर्य, नक्षत्र आदि से प्रकृति पर होने वाली घटनाओं का यथार्थ ज्ञान हो । जैसे सूर्य ग्रहण कब होगा? चन्द्र ग्रहण कब होगा? ऋतुओं का परिवर्तन कब होगा और किस प्रकार होता है, दिन घटनाओं की प्राचीनता का भी निश्चय हो सकता है। उदाहरण के रूप में जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ था, उस समय ग्रह एक युति में थे। पाश्चात्य ज्योतिर्विद-बेली के अनुसार ईसा से 3105 वर्ष पूर्व 20 फरवरी को 2 बजकर 27 मिनट और 30 सैकण्ड पर ग्रह एक युति में थे । अत: महाभारत का समय 3105+2000 = 5107 वर्ष होगा। यह है ज्योतिष के अनुसार महाभारत का समय और परम्परा के अनुसार भी यही ठीक है। इस गणित ज्योतिष को हम सब मानते हैं।

फलित ज्योतिष क्या है: ऐसा कहा जाता है कि यदि जन्म लग्न में राहू हो और छठे स्थान में चन्द्रमा हो तो बालक की मृत्यु हो जाती है। यदि जन्म लग्न में शनि हो और छठे स्थान में चन्द्रमा हो तो सातवें स्थान में मंगल हो तो बालक का पिता मर जाता है। इसी प्रकार यदि रात को बच्चा उत्पन्न होगा तो अमुक प्रकार का होगा, रविवार को होगा तो अमुक प्रकार का होगा, किसी कन्या का विवाह अमुक समय में हो गया तथा विवाह के पश्चात् शुक्रवार या श्राद्ध के दिनों में ससुराल चली जाएगी तो विधवा हो जाएगी आदि-आदि, फलित ज्योतिष सर्वथा मिथ्या है। यह भोली-भाली जनता को ठगने का पाखंड है।

आजकल फलित ज्योतिष शास्त्र का एवं टोने-टोटके आदि की व्यर्थ बातों का प्रचार विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन देकर तथा टेलिविजन के अनेकों चैनलों पर जोर-शोर से हो रहा है। भारतीय संस्कृति के साथ ही नही बल्कि मानव जाति के साथ धोखा एवं खिलवाड़ हो रहा है। आजकल विज्ञान के नाम पर कम्प्यूटर द्वारा जन्म कुण्डली बनवाने का प्रचलन अपनी चरम सीमा पर है जबकि यह विचार करना चाहिए कि कम्प्यूटर तो मनुष्य के द्वारा ही निर्माण किया गया है। उसमें जो डालोगे अर्थात् जो मैटर फीड करोगे वही तो देगा । कहने का तात्पर्य है कि चाहे ज्योतिषी सड़क छाप तोता-मैना वाला हो या कम्प्यूटर से हाल-चाल बताने वाला आधुनिक भाग्य विधाता, फलित ज्योतिष लोगों को मूर्ख बनाने की विद्या है।

एक ही जन्मकुण्डली आदि के आधार पर अलग -अलग ज्योतिषी अलग-अलग भविष्यवाणियाँ करते हैं, किसी भी ज्योतिषी द्वारा लगाए गए अनुमान कभी भी शत-प्रतिशत सही नहीं पाए गए। थोड़े अनुमान ठीक होते है तो आधे से अधिक अनुमान गलत यदि ज्योतिष विज्ञान है तो ऐसा नहीं होना चाहिए । यदि फलित ज्योतिष विज्ञान होता तो उसे स्कूलों कॉलेजों के अन्य विषयों के साथ पढ़ाया जाता । दरअसल सच्चाई तो यह है कि ज्योतिषी अपने वाक्चातुर्य से उस संतुष्टि को जाहिर करने में इतना निपुण होता है कि हर आदमी अपने विषय में जानने के लिए उत्सुक एवं लालायित हो जाता है। कम्प्यूटर का सहारा लेकर विज्ञान का भ्रम पैदा कर लोगों को मूर्ख बनाते रहते हैं ।

आजकल फलित ज्योतिष में विभिन्न कीमती पत्थरों वाली अंगूठियाँ धारण करने की भी झूठी मान्यता तीव्र गति से चल रही

है। अनेक लोग यह कहते सुने गए है कि फलां पत्थरों को अंगूठी में धारण करने से उनका जीवन ही बदल गया, अचानक लाभ होने लगा, बिगड़े कार्य बनने लगे, इत्यादि । होता क्या है कि पत्थर को अंगूठी में धारण करने से व्यक्ति के मन में सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मविश्वास जन्म लेता है। इसके बाद जो भी अच्छा कार्य होता है वह उसका श्रेय अंगूठी को देता जाता है और ज्योतिष पर उसका विश्वास पक्का हो जाता है जबकि यह केवल संयोग की ही बात होती है । यह मानना कि पत्थरों को धारण करने से विभिन्न रोगों से मुक्ति मिल सकती है, पूरे चिकित्सा विज्ञान को नकार देना है। पत्थर धारण करने से व्यक्ति के मानस पटल पर पड़ने वाले प्रभाव का कारण पूरी तरह से मनोवैज्ञानिक ही होता है, जो पत्थर पर विश्वास नहीं करते उन पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता । वर्तमान में फलित ज्योतिष धन कमाने का एक अच्छा साधन बन चुकी है। इसलिए आज वास्तुदोष, कालसर्प योग तथा मंगला-मंगली का डर बताकर ज्योतिषी जी खूब धन ऐंठते हैं। अखबारों और पत्रिकाओं में विज्ञापन दे-देकर इसका खूब प्रचार करते हैं। भविष्य बताने की ऊँची फीस वसूल कर ज्योतिषी जी अपना धंधा जमाए हुए है। फलित ज्योतिष को विज्ञान के साथ जोड़कर पढ़े लिखे लोगों को भी इसकी ओर भ्रमित कर आकर्षित किया जाता है ताकि ज्योतिष के दायरे में अधिक से अधिक लोग आ सके । ज्योतिषियों द्वारा प्रयत्न किया जाता है कि उल्टे-सीधे तर्कों से जनसाधारण के मन में यह बैठाने का प्रयास किया जाए कि ज्योतिष प्राचीन मनीषियों द्वारा विकसित एक ऐसी वैज्ञानिक विद्या है जिसका सही मूल्यांकन करने में आधुनिक विज्ञान असमर्थ रहा है। इन तर्कों का असली मकसद यही होता है कि फलित ज्योतिष के नाम पर चलती हुई दुकानदारी बन्द न हो और कमाई का वह बड़ा स्रोत बना रहे। मानव समाज में कितना घोर अन्याय व धोखा है यह?

दूसरी बात ग्रहों के पास कौन सा ऐसा मंत्र है जिससे वे पृथ्वी पर दूर बैठे हर व्यक्ति के भाग्य को संचालित करते हैं? इस प्रश्न का ज्योतिष के पास कोई उत्तर नहीं है। अंक विद्या और हस्तरेखा विज्ञान भी विज्ञान की आड़ में रूढ़ियों का पोषण करने वाली विद्याओं के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। नियतिवाद का पोषण करने वाली इन विधाओं की बजाय अपने गुण, कर्म, स्वभाव पर ही विश्वास रखना हर मनुष्य के हित में है। हर माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों में आरम्भ से ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करें ताकि वे बड़े होकर समाज को रूढ़िवादिता से मुक्त करने में मदद करें । विज्ञान का कार्य सत्य की खोज करना है न कि किसी रूढ़िवादिता से मुक्त करने में मदद करें । विज्ञान का कार्य सत्य की खोज करना है न कि किसी रूढ़ि का पोषण करना । इसलिए फलित ज्योतिष को किसी भी हालत में विज्ञान न मानते हुए उससे दूर रहकर जीवन में कर्मठ बनकर कर्म करते चलिए, परिश्रम करते चलिए क्योंकि इसी में सुख और सम्पन्नता का रहस्य निहित है।

क्रमशः **-सुरेन्द्र कुमार रैली**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सुख समृद्धि हेतु फलीभूत होती

'घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' योजना में आप भी सहभागी बनें

सभा की यह योजना समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए है जो व्यक्ति अत्यधिक धन खर्च के भय से अपने घर परिवार में यज्ञ नहीं कराते वे भी यज्ञ लाभ कमाएं इसलिए सभा ने यह योजना नि:शुल्क प्रारंभ की हुई है। अत: आप इस योजना का लाभ उठाने के लिए अपने संपर्क के उन घर-परिवारों में जिनमें यज्ञ परम्परा नहीं है उनमें यज्ञ कराने के लिए सभा के आचार्य श्री सत्यप्रकाश जी से संपर्क करें। यह योजना अभी केवल दिल्ली में लागू है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने मार्च 2015 से 'घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' योजना का शुभारम्भ किया था जो बहुत तेजी से फलीभूत हो रही है। सभा की इस योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षित विद्वान् पुरोहित आर्य समाज से सम्बन्धित प्रतिदिन किसी न किसी आर्य महानुभाव के निवास पर पूर्ण वैदिक विधान से यज्ञ कराते हैं और परिवार के बच्चों से साक्षात्कार करते हैं। बच्चों से आर्य समाज वेद एवं महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों से सम्बन्धित वार्तालाप कर उन्हें प्रेरित करते हैं, साथ ही संध्या एवं यज्ञ के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' एवं बालोपयोगी वैदिक साहित्य दिल्ली सभा की ओर से यजमान परिवार को भेंट करते हैं। यह योजना सभा की ओर से नि:शुल्क प्रचार कार्य हेतु प्रारम्भ की गई है जिससे अधिकाधिक लोग अपने घर पर यज्ञादि कार्य कराएं। इस योजना के लिए प्रत्येक कार्यकर्त्ता के लिए साल के 12 महीनों में 12 नये परिवारों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। आर्य कार्यकर्त्ताओं में इस योजना को लेकर काफी उत्साह है।

योजना में आप भी सहभागी बनें: यह योजना वेदानुसार करे गये 'यज्ञो वैश्रेष्ठतमं कर्म:' के आधार पर प्रत्येक परिवार में यज्ञ को पहुंचाने के लिए आरम्भ की गई है। यदि हम सब मिलकर प्रयास करें तो निश्चित रूप से हजारों परिवारों तक परमात्मा की वेदवाणी को संसार एवं मानव मात्र के कल्याणार्थ यज्ञ के माध्यम से हर घर तक पहुंचा सकते हैं। यदि आर्य समाज से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प ले लें कि मैं अपने सम्पर्क के 12 परिवारों की सूची बनाऊंगा, तो निश्चित ही हम महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज के लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की ओर आगे बढ़ रहे होंगे। आप इस कार्य को इस प्रकार पूर्ण कर सकते हैं-

जिन महानुभावों ने अपने 12 घर पूरे कर लिये हैं वे महानुभाव उन 12 परिवारों की सूची सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

आप अपने सम्पर्क में आये पड़ोसियों, कार्य स्थल के सहयोगियों आदि की न्यूनतम 12 लोगों की सूची बनाएं। उनसे सम्पर्क करके उनके या उनकी धर्म पत्नी अथवा उनके बच्चों के जन्म दिन या विवाह की वर्षगांठ की जानकारी प्राप्त करें और जिस पर उनकी सहमति हो उस पर उनसे यज्ञ कराने का आग्रह करें।

आप चाहें तो स्वयं उनके यहां यज्ञ करें, चाहे तो अपनी सम्बन्धित आर्य समाज के धर्माचार्य/पुरोहित से यज्ञ कराएं अथवा उन्हें अपनी आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में आमंत्रित करके यजमान बनाएं और सभा द्वारा विशेष रूप से बनाई गयी 'साहित्य किट' जिसमें सत्यार्थ प्रकाश, दैनिक अग्निहोत्र पत्रक, आर्य समाज-एक निमंत्रण, सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें? यज्ञ सीडी, एक थैला/बैग एवं 'सत्य की राह' सीडी. सम्मिलित है जिसकी कीमत लगभग 70 रुपये है यजमान को नि:शुल्क उपहार स्वरूप प्रदान करें। इस किट को प्राप्त करने के लिए आप श्री विजय आर्य (09540040339) से सम्पर्क कर सकते हैं।

जिस परिवार में आप यज्ञ कराते हैं उस परिवार की विस्तृत जानकारी आप सभा द्वारा उपलब्ध फार्म में भर कर उसकी एक प्रति अपने पास व एक प्रति सभा को उपलब्ध कराएं। इस फार्म की प्राप्ति के लिए श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।

आप भी दिल्ली सभा की इस योजना को फलीभूत बनाने के लिए और घर पर यज्ञ एवं अन्य संस्कारादि कराने के लिए सभा द्वारा नियुक्त आचार्य सत्य प्रकाश जी से मोबाईल नं. 09650183335 पर सम्पर्क कर सकते हैं। इस योजना के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की सहायता व अन्य जानकारी के लिए आप आचार्य ऋषिदेव जी (09540040388) से भी सम्पर्क कर सकते हैं। जो महानुभाव सभा की इस योजना में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं उन्होंने अभी तक कहां-कहां और कितने परिवारों में यज्ञ करवाया व उन परिवारों की क्या प्रतिक्रिया सभा की इस योजना के प्रति रही उससे अवगत कराएं। अपनी प्रतिक्रिया भेजने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली-110005 के पते पर डाक द्वारा या ई- मेल aryasabha@yahoo.com पर मेल करें।

-महामंत्री

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी के तत्वावधान में श्रावणी पर्व का आयोजन

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी के तत्वावधान में श्रावणी पर्व दिनांक 20 से 23 अगस्त 2015 से आयोजित किया जा रहा है, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक प्रवक्ता डॉ. महेश विद्यालंकार, आचार्य भद्रकाम वर्णी अपनी वाणी द्वारा ज्ञानगंगा से समस्त आर्य जनों को ओतप्रोत करेंगे।

-वेद प्रकाश, प्रधान

जयपुर में 108 लड़कियों का उपनयन संस्कार

वैदिक वीरांगना दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनामिका शर्मा ने बताया कि वैदिक परम्परा में महिलाओं को भी यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनने का अधिकार है। इसी परम्परा के निर्वहन में वैदिक वीरांगना दल एक साथ 108 युवतियों का उपनयन संस्कार करवाकर उन्हें जनेऊ धारण करवाएगा। समारोह वैदिक विद्वानों व संन्यासियों के सानिन्ध्य में होगा। संस्कार समारोह में शामिल होने वालों के लिए आवास व भोजन की व्यवस्था है।

-अनामिका शर्मा, मो. 09829665231

कात्यायनमुनि विद्यापीठ का शुभारम्भ

महात्मा रसीला राम वैदिक वानप्रस्थाश्रम (आनन्दधाम आश्रम), गढ़ी, ऊधमपुर(जम्मू कश्मीर) द्वारा एक नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए 26 जुलाई 2015 को विधिवत् 'कात्यायनमुनि विद्यापीठ' की स्थापना की गई जिसमें ब्र. संदीप आर्य, ब्र. लोकेन्द्र आर्य तथा ब्र. जयेन्द्र आर्य इन तीन ब्रम्हचारियों का उपनयन संस्कार विद्यापीठ के कुलपति एवं आश्रम के संरक्षक व मुख्य निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी ने कराया। ट्रस्ट के सभी सदस्यों ने महात्मा चैतन्यमुनि जी का धन्यवाद किया जिनके सान्निध्य में आश्रम निरंतर प्रगति कर रहा है। अध्ययन के इच्छुक एवं दानदाता शीघ्र सम्पर्क करें। **-आचार्य संदीप आर्य, मो. 09466821003**

वेद प्रचार मण्डली

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार व भजनोंपदेशक मण्डल की नियुक्ति की गई है। भारत के समस्त आर्य समाज भजनोपदेश मण्डल को आमंत्रित कर महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने हेतु श्री एस.पी. सिंह जी से संपर्क करें। **संपर्क सूत्र:- 09540040324**

आपके सुझाव आर्य सन्देश हेतु क्या आपके पास कोई ऐसा सुझाव व विचार है जिससे आर्य सन्देश को और अधिक लोकप्रिय बनाया जा सके? यदि हां तो आज ही अपने विचार व सुझाव हमें ई-मेल करें, हमारा पता है - **aryasandeshdelhi@gmail.com**

आर्य समाज अजमेर ने दी पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम को श्रद्धांजलि

आर्य समाज अजमेर, दयानन्द बाल सदन की प्रबंधकारिणी सभा तथा बालक-बालिकाओं की आर्य कुमार सभा ने अपनी संयुक्त शोक सभा में राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के निधन पर हार्दिक दु:ख व्यक्त कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वेद मंत्रों द्वारा विशेष प्रार्थना कर शान्तिपाठ किया। इस अवसर पर सदन तथा आर्य समाज अजमेर के प्रधान प्रो. रासा सिंह ने उनके निधन को राष्ट्र की अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा कि 'मिसाईल मैन' के नाम से प्रख्यात, भारत को शक्तिशाली एवं परमाणु शक्ति से सम्पन्न बनाने वाले महान वैज्ञानिक आदर्श महामानव तथा दूरदृष्टि युक्त विद्वान लेखक एवं जनता के दिलों में स्थान बनाने वाले राष्ट्रपति थे। भारत के सुदूर दक्षिण में एक मछुआरे के परिवार में जन्म लेकर साहस, पुरुषार्थ एवं अनवरत अध्ययन, लगनशीलता एवं निष्ठा से भारत रत्न बनकर महान देश के राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया।

- चिरंजीलाल शर्मा, मंत्री

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति, इलाहाबाद वैदिक विद्वानों को प्रोत्साहनार्थ उनकी कृति पर अब 21000/- का पुरस्कार प्रदान करती है। यह पुरस्कार प्रयाग में एक भव्य समारोह में प्रदान किया जाता है। इस वर्ष प्रख्यात विद्वान डॉ. राम प्रकाश कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार को प्रदान किया जाएगा।

-राधे मोहन, प्रधान

शोक समाचार

आर्य समाज मॉडल टाउन की सक्रिय सदस्या श्रीमती कृष्णा आर्य का निधन

आर्य समाज मॉडल टाउन की सक्रिय सदस्या एवं स्वामी जगदेश्वरा नन्द जी के भ्राता श्री मुरारीलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा आर्य पूज्य माताश्री अजय आर्य एवं अनिल आर्य का दिनांक 6 अगस्त 2015 को निधन हो गया। पूज्य माताजी की इच्छानुसार उनके परिजनों ने उनका देहदान लेडी हार्डी अस्पताल दिल्ली को भेंट कर दिया। माताजी की पुण्य स्मृति में दिनांक 9 अगस्त 2015 को अग्रसेन भवन डी, ब्लाक अशोक विहार फेस-1 में एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी जिसमें दि. आर्य. प्रति. सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारियों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

10 अगस्त से 16 अगस्त, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 13 अगस्त/ 14 अगस्त, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 अगस्त, 2015

आर्यजन कृपया ध्यान दें आर्यसमाजों में प्रचार हेतु एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाओं का लाभ लें

सभी समाजों के अधिकारियों से सानुरोध प्रार्थना करते हुए विशेष सूचना दी जा रही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जो प्रचार वाहन चलाया जा रहा है उसमें बहुत अच्छा भजनीक है जो अपने साथियों के साथ सुन्दर भजन व प्रचार का कार्य कर रहा है। आप इनको वाहन सहित या जिस आर्य समाज मन्दिर के आगे वाहन खड़ा करने की जगह न हो तो भी भजनीक को बुला सकते हैं। वाहन में वैदिक साहित्य प्रचार सामग्री भी उपलब्ध रहेगी। इस वाहन पर होने वाला खर्चा जैसे भजनीक, वादक व वाहन चालक तथा सहायक सभी का खर्चा व वेतन आपकी दि.आ.प्र.सभा द्वारा व्यय किया जाता है। यदि आप इसका लाभ उठायें जिससे प्रचार कार्य सरलता पूर्वक बढ़ता रहे, जिसकी समाज को अपेक्षा है। **सम्पर्क करें- एस.पी. सिंह मो. 9540040324**

प्रतिष्ठा में,

सत्यार्थ प्रकाश नि:शुल्क वितरण योजना

सभा की यह योजना सत्यार्थ प्रकाश को भारत ही नहीं विश्व की सभी महत्वपूर्ण लाईब्रेरीस, विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा संस्थानों, दूतावास, सरकारी कार्यालयों तक पहुंचाने की है। इसके लिए एक स्थाई निधि बनाई गई है। हर तीन महीने के ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश लगातार भेजी जा रही है। ये एक सतत योजना है, जितना धन होगा उतनी ही ये तेजी से सब लाईब्रेरी में पहुंच जाएगी। विदेशों में इनका इंग्लिश वर्जन तथा सब प्रान्तों एवं अन्य भाषा वाले देशों में उनकी भाषा में (यदि उपलब्ध है तो) भेजे जाने की योजना है अभी तक का सभा का अनुभव बहुत उपयोगी रहा है। आशा है कि ये योजना अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में कामयाब रहेगी।

आपका सहयोग: आप अपने नाम से पारिवारिकजन के नाम से एक निधि बना सकते हैं। जो निधि हमेशा आपके शुभ नाम से स्थिर रहेगी और ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश लाईब्रेरी में पहुंचाई जाती रहेगी अथवा आप एक मुश्त राशि प्रत्येक वर्ष जन्मदिवस, विवाह वर्षगांठ के अवसर पर सभा को देकर जितनी चाहें सत्यार्थ प्रकाश लाईब्रेरी में भिजवा सकते हैं। वर्तमान स्थूलाक्षर (बाईंडिंग वाली सत्यार्थ प्रकाश) मूल्य भेजने के खर्च सहित लगभग 200/- रुपये प्रति है। **-महामंत्री**

आर्य समाज मंदिर, शकरपुर के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज मंदिर, शकरपुर दिनांक 29 अगस्त से 5 सितम्बर 2015 तक मंदिर प्रांगण में वेद प्रचार सप्ताह एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व का आयोजन कर रहा है। जिसके अन्तर्गत चतुर्वेद शतक पारायण सामूहिक यज्ञ एवं भजन, प्रवचन एवं योगिराज द्वारा श्री कृष्ण के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन कराया जाएगा।

निवेदक-

मिश्रीलाल गुप्ता, प्रधान, मो. 09971802305,

पतराम त्यागी, मंत्री मो. 09868178177

बच्चों के ज्ञान विकास के लिए अमूल्य भेंट

बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश

मूल्य मात्र 10 रुपये प्रति

नि:शुल्क वितरण हेतु 1000 प्रति

लेने पर 20% की विशेष छूट

-: प्राप्ति स्थान :-

वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15,

हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

-श्री विजय आर्य

फोन : 011-23360150,

09540040339

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह